प्रकाशन तिथि : 15 मार्च, 2021
प्रेषण तिथि : 19 मार्च, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 01 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

तीरथसिंह बने उत्तराखण्ड के सीएम

भारतीय जनता पार्टी की नेतृत्व परिवर्तन नीति के तहत 10 मार्च को उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने अपना पद त्याग दिया। 11 मार्च को आयोजित विधायक दल की बैठक में तीरथसिंह रावत को नया नेता चुना गया और उसी दिन उन्होंने शपथ ग्रहण कर उत्तराखण्ड के नए मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाल लिया। तीरथसिंह सुपुत्र श्री कलमसिंह मूल निवासी सिरोन-पौड़ी का जन्म 9 अप्रेल 1964 को हुआ था। इनके पिता रेलवे में फिटर थे। बचपन से ही उनकी रुचि राजनीति में रही है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

भूंगरा में शहीद हमीर सिंह की प्रतिमा का अनावरण

जोधपुर के शेरगढ़ क्षेत्र के भूंगरा गांव में 26 फरवरी को शहीद हमीर सिंह की प्रतिमा अनावरण समारोह माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के साथ प्रारंभ हुए समारोह को माननीय संघप्रमुख श्री ने संबोधित करते हुए कहा कि हमें शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बात सैनिक की हो रही है तो सैनिक बनने के लिए हमारे बीच में से ही लोग फौज में जाते हैं, वहां ट्रेनिंग में व उसके बाद निरंतर अभ्यास के द्वारा उनके जीवन में अनुशासन आ जाता है लेकिन जो पीछे रह जाते हैं उनके जीवन में भी अनुशासन की उतनी ही आवश्यकता है, उनके जीवन में भी बदलाव आए इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संपादक को पत्र लिखकर जताया ऐतराज

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबद्ध पत्रिका 'पाथेय कण' के नवीनतम अंक में श्रावस्ती के शासक महाराजा सुहेलदेव को पिछड़ी जाति का बताए जाने को लेकर श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक एवं संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी ने पत्रिका के संपादक को पत्र लिखकर ऐतराज जताया एवं उसकी एक प्रति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय को भी भेजी गई। पत्र में लिखा गया कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबद्ध पत्रिका द्वारा महापुरुषों से संबंधित तथ्यों को तोड़मरोड़ कर भ्रामक जानकारी प्रकाशित की गई। ऐसे कृत्य से समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति सम्मान कम हुआ है एवं अनेक लोग इसको लेकर सोशल मीडिया में आक्रोश जता रहे हैं।

जीते हैं तो जीते हुए ही रहें : रोलसाहबर

जो दायित्व मिला है वह भगवान का दिया हुआ है। संयोग ऐसा बैठा कि आप जीत गये, अब जीत गये हैं तो जीते हुए ही रहें। श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है विजयी भवः। आप लोग बार बार विजयी बनें और सफल होकर और अच्छा काम करें। जोधपुर में पावटा स्थित मीरा गार्डन में 28 फरवरी को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा आयोजित जनप्रतिनिधि कार्यशाला को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि सभी जनप्रतिनिधियों को अपने अधिकार और कर्तव्य जानने चाहिए। आप किसलिए जनप्रतिनिधि बनें हैं यह जानना जरूरी है। बनने की अकड़ नहीं पालनी है, अहंकार युक्त विकार नहीं पालना है। क्या क्या कर सकते हैं यह जानकारी हासिल करें। जिसने वोट दिया है उसका भी

काम करें और जिसने वोट नहीं दिया उनको भी उतना ही महत्व देवें तब ही राम बन सकेंगे। राम ने राजधर्म के लिए पत्नी तक का त्याग कर दिया था। भगवान कृष्ण ने भी कर्तव्य पालन किया था। हम उनके आठ आठ पटरानियां सुनते हैं लेकिन उन सभी ने उनका ही वरण किया था, भगवान कृष्ण ने किसी का वरण नहीं किया। आप राजपूत के रूप में यहां आये हैं तो रजपूती के साथ जो नाता है उसे नहीं भूलें। दिल से चाहता हूँ कि आपको जो सफलता मिली है वह बार बार मिले लेकिन उस सफलता के पीछे अनेक लोगों का ऋण है उस ऋण को न भूलें। उस रात को न भूलें, उस जात को न भूलें। सारा संसार मार्ग से भटक गया है, उसे सही मार्ग पर लाने का काम क्षत्रिय का है और श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी का शिक्षण है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के बारे में बोलते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि दो वर्ष पूर्व इसके गठन के समय इन लोगों को कहा था कि आप कोई पदाधिकारी नहीं बल्कि कर्तव्य निभाने वाले लोग बनकर रहें। इन दो वर्षों में इन्होंने कर्मठता पूर्वक राजस्थान के बड़े भाग में इस संस्था की आवश्यकता समझाई है और लोकसंग्रह किया है। कार्यक्रम का पूज्य तनसिंह जी को नमन कर प्रारंभ किया गया। संघ के जोधपुर संभाग के संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक ने फाउंडेशन के कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन करते हुए रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि हमारे पूरे जीवन का केंद्र बिंदु समाज बन जाए इसका शिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ देता है। संघ के शिक्षण से शिक्षित ऐसे सामाजिक भाव वाले लोग विभिन्न तरीकों से समाज में कर्मशील हैं। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन भी संघ का ऐसा ही प्रयोग है। आप सभी जनप्रतिनिधियों की ऊर्जा समाज के लिए कैसे उपयोगी साबित हो उस पर कार्य करने की जरूरत है, ताकि आप लोग समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा सकें। साथ ही आपका आपस में सामंजस्य और सहयोग बढ़े, इस पर भी काम करने की आवश्यकता है और इसी उद्देश्य से यह कार्यशाला रखी गई है। कार्यक्रम में संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कहा कि 22 दिसम्बर को संघ की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होंगे। ऐसे में यह वर्ष हीरक जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा। इसको लेकर अलग अलग तरह के कार्यक्रम होंगे। इन कार्यक्रमों में आप भी अपनी भागीदारी निभाएं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित बदलते दृश्य पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में मरूधरा मंडोर के शासक राव चूंडा जी का उल्लेख हुआ है। इस बार उनके बारे में जानेंगे।

विक्रम संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध काल तक राठौड़ वंश की राजस्थान में जनसंख्या और भूमि की दशा में काफी वृद्धि हुई। परन्तु रावल मल्लीनाथ के देहान्त के उपरान्त राज्य शक्ति का ह्रास हुआ। वीरमदेव की मृत्यु हो जाने से राठौड़ों को महान क्षति ही नहीं हुई, एक बार तो राठौड़ राज्य छिन्न-भिन्न हो गया था। परन्तु उसी समय विपत्ति काल में वीरमदेव के वंश में एक ऐसे भाग्यशाली और कर्मठ वीर का जन्म हुआ जिसके कारण राठौड़ राज्य के अस्त होते सूर्य का पुनः उदय हुआ। वह था राठौड़ चूंडा। उसका जन्म खेड़ राज्य के सालोड़ी में वि.सं. 1434 में हुआ। उसके बचपन में ही पिता वीरमदेव को खेड़ राज्य से निष्कासित होना पड़ा था। तीन वर्ष वह अपने पिता के साथ में रहा। वि.सं. 1440 में जोइयावाटी में उसके पिता की मृत्यु होते ही वह घोर संकटों में घिर गया। यद्यपि कुछ उसके बड़े भाई देवराज, गोगादेव आदि विद्यमान थे परन्तु वे इससे दूर पड़ गए थे और उनकी बुद्धिमान माता मांगलियाणी देव प्रदत्त विपत्तियों की परवाह न करके अपने इस होनहार पुत्र को जोइयों और जगमाल से छुपाकर रखना चाहती थी और उसने बड़े साहस के साथ अपने इस संकल्प को निभाया। राव चूंडा की माता अपने इस पुत्र को लेकर अपने पीहर या सौत पुत्रों के पास नहीं गई। गुप्त रूप से आल्हा चारण के घर कलाऊ में रही और विपत्ति के विकट पहाड़ों को पार किया। बचपन में चूंडा झौंपड़ी में रहकर चारण की गायों के टोगड़े चराते। जब वह लगभग 12 वर्ष का हुआ तब चारण के सामने अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुआ। आल्हा चारण ने उसे रावल मल्लीनाथ के दरबार में पहुंचा दिया। मल्लीनाथ ने उसे अपने पास रख लिया और थोड़े समय के बाद उसे पहले तो अपने राज्य की कच्छ की ओर सीमा के थाने पर भेजा और फिर उगमसिंह इंदा की संरक्षण में झालोड़ी के थाने पर भेज दिया। रावल मल्लीनाथ ने यह भांप लिया था कि चूंडा होनहार है और वह आगे बढ़ेगा। मल्लीनाथ यह जानता था कि जगमाल कभी न कभी चूंडा पर घात करेगा। इसीलिए चूंडा को उससे दूर रखना चाहता था। मल्लीनाथ को शायद यह भी आभास हो गया था कि जगमाल द्वारा अब राठौड़ राज्य की वृद्धि नहीं होगी और चूंडा महत्वाकांक्षी युवक है वह राठौड़ राज्य को वृद्धि की ओर ले जाएगा। चूंडा को झालोड़ी के थाने पर भेजते समय जगमाल ने इसीलिए विरोध नहीं लिया कि चूंडा चुप नहीं रहेगा और जब वह मुसलमानी क्षेत्र में बढ़ेगा तो मुसलमान उसे मार देंगे और उसका कांटा सहज ही निकल जाएगा। यहां पर कुछ ख्यातो से यह भी लिखा मिलता है कि कच्छ की ओर के थाने पर रहते समय चूंडा ने सिंध की ओर से मुस्लिम शासकों के घोड़े छीनकर अपने राजपूतों में बांट दिए थे। जिनका मूल्य मल्लीनाथ को चुकाना पड़ा था। इस कारण जगमाल के कहने पर मल्लीनाथ ने चूंडा को अपने राज्य से निकाल दिया था। जिस पर वह इंदो के पास जाकर रहा था। उस समय उगमसी इंदा बड़ा बुद्धिमान था, कच्छ की सीमा पर चूंडा उसके संरक्षण में रहा था उसने चूंडा को समझ लिया था कि वह एक होनहार व्यक्ति है। इसीलिए वह चूंडा को चाहता था और प्राण-प्रण से उसकी सहायता करना चाहता था। इंदो की 84 गांवों की जागीर उस समय मण्डोवर के मुसलमानी थाने के मातहती में थी और उन्हीं के रिश्तेदारों कोटेचों, आसायचों व सांखलों की चौरासियां भी इसी थाने के अधीन थी। पड़ौस में जैतारण सिंघल राठौड़ के अधिकार में था। इस प्रकार राजपूतों का उस क्षेत्र अच्छा जोड़ था। चाहे चूंडा मल्लीनाथ द्वारा झालोडी के थाने रखा गया हो चाहे खेड़ राज्य से निष्कासित होकर इन्दों के पास रहता हो मगर चूंडा ने इन आसपास राजपूतों से सम्पर्क अवश्य बढ़ाया। उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति बड़ी डांवाडोल हो चुकी थी। उसका प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ रहा था। दिल्ली पर तुगलकों का अधिकार था। फिरोजशाह की मृत्यु (वि.सं. 1445) के बाद उनका शासन एक फसादी दंगल बन गया था। वि.सं. 1451 तक पांच बादशाह बदल चुके थे। उनका अंतिम बादशाह महमूद वि.सं. 1469 तक रहा। गुजरात व मालवा के स्वतंत्र हो चुके थे और मण्डोवर व जालोर के थाने लड़खड़ा चुके थे। राठौड़ों को बढ़ने का अच्छा अवसर मिल गया था। परन्तु उनके पहले से संगठित राज्य खेड़ का शासक जगमाल अपने ही भाइयों को गिराने की घातों में उलझकर इतना गिर गया था कि अपने राज्य को बढ़ाने में अयोग्य हो चुका था। परन्तु चूंडा ने अवसर का लाभ उठाया और अन्य राजपूतों की सहायता से मण्डोवर मुसलमानों से छीनकर वहां राठौड़ राज्य की स्थापना में सफल हो गया। चूंडा का बचपन और मण्डोवर राज्य की प्राप्ति तक वे 18 वर्ष तक का जीवन बड़ा संकटमय रहा। वि.सं. 1451-52 में सिकन्दर तुगलक और नसरुद्दीन महमूद शासक का परस्पर के विरोधों से घिरा हुआ शासन था। चूंडा इस अवसर लाभ उठाकर इन्दों, मांगलियों, सिंघलों, सांखलों, कोहेचो आदि राजपूतों के संगठन की सहायता से मण्डोवर मुसलमानों छीनने में सफल हुआ। इस राजपूत संगठन के मुखिया इन्दा थे। उनका मुखिया उगमसी इन्दा और उसका पुत्र शिरथा थे। यह सभी चूंडा को चाहते थे। इसीलिए इन्होंने चूंडा को इस अभियान में अपना नेता बनाया तथा मण्डोवर हस्तगत करने के उपरान्त इन्दों ने अपने परिवार की एक कन्या का विवाह चूंडा के साथ कर दिया। जो उगम सी की पौत्री एवं गंगदेव की पुत्री लीलादे थी। सभी राजपूतों की ओर से इन्दों ने चूंडा को राजतिलक कर मण्डोवर को दहेज में दे दिया। चारणों ने इस प्रकार कहा -

'इन्दा रो उपकार, कदयेन भूला कमघजां।
सहु जावो संसार, मण्डोवर हथलैवो दिवो।।'

उस समय उन सब राजपूतों ने चूंडे को अपना राजा मान कर अपनी जागीरें उससे सुरक्षित करवा ली थी। मण्डोवर से चुंडा राज्य विस्तार के लिए नागौर की तरफ बढ़ा। नागौर उस समय दिल्ली के केन्द्रीय शासन में था और बादशाह की ओर से जलाल खां खोखर वहां का हाकिम (शासक) था। चूंडा ने अपने अनुकूल अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। उसका सैनिक संगठन सुदृढ़ हो चुका था। इसके अलावा राव मल्लीनाथ और अपने बड़े भाई राव देवराज एवं राव गोगादेव आदि से भी उसने सहायता ली और नागौर पर अधिकार किया। यह घटना वि.सं. 1452 की है। जब चूंडा ने नागौर पर अधिकार किया। तब नागौर का पराजित शासक जलाल खां भागकर गुजरात के शासक जफर खां के पास गया। वि.सं. 1453 में जब जफर खां ने अपने आप स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी और मुजफ्फरशाह के नाम से स्वतंत्र सुल्तान बन गया। फिर जलाल खां एवं गुजरात के सुल्तान ने वि.सं. 1453 में मण्डोवर पर आक्रमण किया एवं काफी समय तक घेरा डेला रखा। मगर चूंडा के सामने हार मानकर वापस चला गया। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि लम्बा घेरा रहा था, जब किले में रसद की कमी हो गई तो चूंडा ने मुसलमानों संधि कर ली एवं जलाल खां को नागौर वापस दे दी। मगर सही अवसर पाकर वि.सं. 1478 में चूंडा ने फिरोज खां पर आक्रमण किया और नागौर छीन लिया। अजमेर पर वि.सं. 1462 में अधिकार किया था। नाडौल पर भी अधिकार रहा। चूंडे का राज्य उस समय उत्तर में वर्तमान बीकानेर के पश्चिमी क्षेत्र चूंडासर, पिलाप आदि तक, पश्चिम में फलोदी तक, दक्षिण में मेवाड़ प्रदेश गोडवाड़ प्रदेश के पाली व सोजत तक, पूर्व में डीडवाना व सांभर तक था। राव चूंडा बड़ा दानवीर था। बड़ली सहित सात गांव पुरोहितों को दान में दे दिए थे। चूंडा के 19 पुत्र थे। फिरोज खां दो वर्ष बाद वि.सं. 1480 में मुल्तान के शासक सलेम खां से सहायता लेने में सफल हुआ। पूगल का केलण भाटी, जांगलू का देवराज सांखला और कायम खां चौहान आदि ने मिलकर चूंडे पर आक्रमण किया। चूंडे ने अपने पुत्रों को तो पहले ही नागौर से बाहर भेज दिया था। वह अकेला थोड़े से आदमियों को साथ लेकर मुकाबले से आ रहा और युद्ध करके वीरगति को प्राप्त हुआ। चूंड़ा का जयेष्ठ पुत्र रणमल उस समय सोजत में था। जब रणमल को पिता की मौत का पता चला तो अजमेर से वापस आते समेल खां व फिरोज खां पर आक्रमण कर इन दोनों को मार कर पिता का बदला लिया।

संदर्भ ग्रन्थ : (1) राठौड़ों का उदय और विस्तार- भूरसिंह राठौड़ एवं डॉ. लक्ष्मणसिंह गड़ा (पृष्ठ 84)
(2) बाकीदास की ख्यात। (3) नैणसी की ख्यात। (4) चूंडे जी री बात।

-प्रेषक : सवाई सिंह बेलवा

मालवा का परमार वंश

मालवा के परमार वंश के बारे में जानकारी अभिलेखों, साहित्य व समकालीन विदेशी यात्रियों के विवरण व मुस्लिम लेखकों के ग्रन्थों से मिलती है। अभिलेखों में सीयक द्वितीय का हार्सोल अभिलेख, वाक्पति मुंज का उज्जैन अभिलेख, भोज के बांसवाड़ा और बैवमा के अभिलेख आदि प्रमुख है। परमार वंश के इतिहास का ज्ञान विभिन्न साहित्यक ग्रन्थों से भी मिलता है, इनमें सबसे महत्वपूर्ण है पदमगुप्त द्वारा रचित 'नवसाहसाक चरित'। पद्मगुप्त परमार शासक वाक्पति मुंज व सिन्धु राज का राजकवि था, उसकी रचना से परमार वंश के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। 'मेरुतुंग' के 'प्रबन्ध चिंतामणि' से भी परमार वंश के बारे में अनेक जानकारी मिलती है। मुस्लिम लेखकों में अल्बरुनी तथा फरिश्ता के विवरण उल्लेखनीय है। अभिलेखों के अनुसार मालवा की परमार शाखा विक्रम संवत् के प्रवर्तक महान सम्राट विक्रमादित्य के वंशज थे। मालवा के परमार वंश के शासकों ने अपनी प्रारंभिक राजधानी धारा नगरी को बनाया। मालवा के परमार वंश का संस्थापक उपेन्द्र था जिसको इतिहास में कृष्णराज के नाम से भी जाना जाता है उपेन्द्र ने दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में धारा को राजधानी बनाते हुए परमार वंश की स्थापना की। प्रारंभिक परमार शासक राष्ट्रकूट शासकों के सामन्त के रूप में शासन कर रहे थे जिनमें वैरिसिंह प्रथम, सीयक प्रथम, वाक्पति प्रथम आदि थे। इन शासकों के शासन काल में परमारों का राज्य केवल धारा नगरी के इर्द-गिर्द ही सिमटा रहा। सर्वप्रथम सीयक द्वितीय (945-972 ई.) ने परमारों को राष्ट्रकूटों के सामन्त की स्थिति से स्वतंत्र शासकों की स्थिति में पहुंचाया। सीयक द्वितीय का दूसरा नाम श्री हर्ष भी था। सीयक द्वितीय ने नर्मदा के किनारे हुए युद्ध में राष्ट्रकूट नरेश खोटिट्ग को परास्त किया। वह पराजित राष्ट्रकूट नरेश का पीछा करते हुए उसकी राजधानी मान्यखेत तक पहुंचा और वहां से अत्यधिक सम्पति लूट कर धारा नगरी लाया। उदयपुर लेख में इस विजय का बहुत ही अलंकारिक शब्दों में वर्णन किया गया है। लेख के अनुसार सीयक ने 'भयंकरता से गरुड की तुलना करते हुए खोटिट्ग की लक्ष्मी को युद्ध में छीन लिया।' सीयक की इस विजय के फलस्वरूप परमार राज्य की दक्षिणी सीमा ताप्ती नदी तक जा पहुंची। इसके अतिरिक्त सीयक द्वितीय ने गुजरात के चालुक्य शासक योगराज तथा हुणमण्डल (मालवा के उत्तर पश्चिम में स्थित) के एक सरदार को पराजित किया था, परन्तु खजुराहो अभिलेख के अनुसार सीयक द्वितीय को चन्देल शासक यशोवर्मन के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। **(क्रमशः)**

हीरक जयन्ती वर्ष के तहत कार्यक्रम आयोजित

अवाणिया

बाड़मेर

हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला निरंतर जारी है। इसी श्रृंखला के अंतर्गत बाड़मेर संभाग में बान्दरा गांव स्थित भाप तालाब पर 28 फरवरी को संघ तीर्थ दर्शन अभियान के अंतर्गत स्नेहमिलन व स्नेहभोज का कार्यक्रम रखा गया। इसी स्थान पर बाड़मेर में संघ का प्रथम शिविर लगा था जो श्री क्षत्रिय युवक संघ की शिविर श्रृंखला का चौथा शिविर था और संघ के द्वितीय संघ प्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील का पहला शिविर था। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक और शिक्षाविद कमल सिंह चूली ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने संघ के रूप में हमें एक जीवन दर्शन दिया है जिसे अपना कर हम अपने जीवन का सफल बना सकते हैं। पुरुषार्थ द्वारा कर्त्तव्य का पालन और कर्त्तव्यपालन को ही अधिकार मानने की संघ की शिक्षा ही क्षात्र धर्म की शिक्षा भी है। स्वधर्म पालन के इस मार्ग पर निरंतर बढ़ते जाने में ही हमारा कल्याण है। संघ के केंद्रीय कार्यकारी देवीसिंह माडपुरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि उनके प्रथम शिविर में श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा ने प्रथम बौद्धिक के दौरान बताया कि जिस प्रकार कसेरे द्वारा बनाये प्रत्येक बर्तन का एक निश्चित हेतु होता है, कुम्भकार द्वारा बनाये प्रत्येक पात्र का एक उद्देश्य होता है उसी प्रकार मनुष्य भी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, उसका जीवन निरुद्देश्य नहीं हो सकता। स्वधर्म ही हमारे जीवन का वह हेतु है जिसके पालन में जीवन की सार्थकता निहित है और संघ हमें वही याद दिला रहा है। संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रदान की तथा अधिकाधिक सहभागिता का आह्वान किया। इस दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक नरपत सिंह चिराणा, प्रान्त प्रमुख महिपाल सिंह चूली, दीप सिंह रणधा, वीर सिंह शिवकर, प्रकाश सिंह भुरटिया, कमल सिंह राणीगांव, राजेन्द्रसिंह भिंयाड़, स्वरूप सिंह खारा, मांग सिंह बिशाला, जैतमाल सिंह बिशाला, गुलाब सिंह कोटड़ा, ढूढ़ सिंह कोटड़ा, मलसिंह उण्डखा सहित 500 से अधिक समाजबन्धु उपस्थित रहे। 28 फरवरी को ही पंचदेव मंदिर, कनकपुरा (जयपुर) में भी हीरक जयन्ती वर्ष के तहत बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने समाजबंधुओं को संघ का परिचय देते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने समाज की पीड़ा को अनुभव किया और उस पीड़ा की औषधि के रूप में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। आगामी 22 दिसंबर को संघ की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन जयपुर में किया जा रहा है जिसके लिए हमें अधिकतम लोगों से संपर्क करना है। कार्यक्रम के दौरान कर्ण सिंह भूणी, वीरेन्द्र सिंह खिंदास, प्रेम सिंह बनवासा, देवेन्द्र सिंह बरवाली सहित अनेकों समाजबन्धु व सहयोगी उपस्थित रहे। जयपुर शहर प्रांत प्रमुख सुधीर सिंह ठाकरियावास ने कार्यक्रम का संचालन किया। नागौर संभाग के कुचामन प्रान्त के जंजीला गांव में भी 28 फरवरी को हीरक जयंती वर्ष के तहत स्नेहमिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान बजरंग सिंह नेणिया तथा बलजीत सिंह नाथावतपुरा समाज बंधुओं सहित उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग के अंतर्गत बेलासर गांव में 28 फरवरी को तीर्थदर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बीकानेर प्रांत प्रमुख खींव सिंह सुल्ताना ने कहा कि संघ की हीरक जयन्ती में अधिकाधिक समाज बंधुओं की सहभागिता हो, इसके लिए हमें वर्ष भर इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मशील रहना होगा। चुरू प्रांत प्रमुख राजेन्द्र सिंह आलसर ने कहा कि सामाजिक भाव व संस्कारों की कमी से व्यक्तिवाद और अहंकार जैसी विकृतियाँ समाज में बढ़ रही हैं, इन विकृतियों को दूर करने के लिए संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली ही एकमात्र मार्ग है। जुगल सिंह बेलासर, महेन्द्र प्रताप सिंह तथा प्रताप सिंह ने व्यवस्था में सहयोग किया।

इसी प्रकार जालोर संभाग में 27 फरवरी को करड़ा स्थित श्री करड़ेश्वर महादेव मंदिर में तथा 28 फरवरी को सेवाड़ा तथा डूंगरी (रानीवाड़ा) में तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तीनों कार्यक्रम संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी की उपस्थिति में सम्पन्न हुए। उन्होंने कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित समाजबंधुओं से कहा कि पूज्य तनसिंह जी जैसे महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें निरंतर सद्मार्ग पर बढ़ते रहना चाहिए। संघ का मार्ग सेवा का मार्ग है और सेवा ही ईश्वर की ओर बढ़ने का मार्ग है। इन कार्यक्रमों में गणपत सिंह करड़ा, देवी सिंह, हेम सिंह सेवाड़ा, धर्म सिंह, मंगल सिंह, अर्जुन सिंह, उक सिंह डूंगरी, उम्मेद सिंह, पर्बत सिंह, महेंद्र सिंह कारोला, प्रेम सिंह अचलपुर एवं फूल सिंह जाखड़ी सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित सम्मिलित रहे। जालोर संभाग के अंतर्गत मंडला गांव में 28 फरवरी को स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें खुमान सिंह दुदिया, गणपत सिंह मंडला, ईश्वर सिंह, सुरेंद्र सिंह, राजपाल सिंह, भबूत सिंह, लाख सिंह, मान सिंह, चमन सिंह सहित अनेकों समाज बन्धु उपस्थित रहे। इस दौरान चरली गांव के दोनों भागों में भी हीरक जयन्ती के निमित्त संपर्क किया गया। रेवदर राजपूत होस्टल में भी तीर्थदर्शन कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रान्त प्रमुख सुमेर सिंह उथमण सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने संघदर्शन तथा संघ साहित्य को घर-घर तक पहुंचाने का उपस्थित समाज बंधुओं से आह्वान किया। पाली प्रान्त के रोहिट मंडल के गेलावास गांव में भी तीर्थ दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रान्त प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया तथा हीरक जयन्ती के सम्बंध में जानकारी प्रदान की। लाल सिंह सिराणा, दशरथ सिंह सिराणा तथा सरपंच भैरूसिंह गेलावास समाजबंधुओं के साथ उपस्थित रहे। 28 फरवरी को ही गुजरात के बनासकांठा प्रान्त में थराद तहसील के चार गांवों - करबुण, नारोली, वाघासण तथा सवराखा में तीर्थ दर्शन कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिनमें प्रान्त प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर ने हीरक जयन्ती के निमित्त चलाये जा रहे अभियान के विभिन्न पहलुओं को उपस्थित समाज बंधुओं के सामने स्पष्ट किया। कार्यक्रम के दौरान सिद्धराज सिंह पीलूड़ा, अरविंद सिंह नारोली, परबतसिंह वलादर, श्रवणसिंह वलादर, गणपत सिंह पीलूड़ा तथा जब्बरसिंह सुईगाम सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इसी दिन गुजरात के ही सौराष्ट्र संभाग के खोडियार प्रान्त में भी नारी गांव में तीर्थदर्शन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी महेन्द्र सिंह पांची ने उत्साहपूर्वक हीरक जयन्ती की तैयारी में लगने का उपस्थित स्वयंसेवकों से आह्वान किया। छनुभा पच्छेगाम ने संघ की कार्यप्रणाली की जानकारी प्रदान की तथा प्रान्त प्रमुख मंगल सिंह धोलेरा ने हीरक जयन्ती के बारे में जानकारी साझा की। बनासकांठा प्रान्त में ही संघ तीर्थ दर्शन का एक अन्य कार्यक्रम कृष्णानगर सोसायटी, थराद में 02 मार्च को आयोजित हुआ। इसमें प्रान्त प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर, भमर सिंह माडका, गजेन्द्र सिंह नारोली तथा डूंगरसिंह रामसण समाजबंधुओं व सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली से परिचित कराया गया तथा हीरक जयन्ती कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी दी गई। थराद शहर में शाखा प्रारम्भ करने का भी निर्णय किया गया तथा उपस्थित स्वयंसेवकों को हीरक जयन्ती से संबंधित दायित्व भी सौंपे गए।

इसी क्रम में जालोर संभाग में 07 मार्च को सुरावा और पांचला गांव में संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पांचला में सम्पन्न कार्यक्रम में सांचोर प्रांत प्रमुख महेन्द्र सिंह कारोला ने उपस्थित समाजबंधुओं को हीरक जयन्ती तथा संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। ईश्वर सिंह चौरा ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। मोती सिंह सिवाड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इसी प्रकार सुरावा में वरिष्ठ स्वयंसेवक किशन सिंह सुरावा की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ की हीरक जयन्ती संघ के लिए और समाज के लिए एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। इसमें हम सभी की सहभागिता होनी ही चाहिए। समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक हीरक जयन्ती का संदेश पहुंचना चाहिए। कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला और ईश्वर सिंह चौरा सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग में भी 07 मार्च को कितासर और धीरदेसर चोटियां गांव में कार्यक्रम आयोजित हुए। कितासर में करणी सिंह के आवास पर आयोजित कार्यक्रम का संचालन भगीरथ सिंह सेरूणा ने किया। भरत सिंह सेरूणा ने संघ के उद्देश्य तथा कार्यप्रणाली की जानकारी दी। इसी प्रकार धीरदेसर में माता जी मंदिर राजपूत धर्मशाला में कार्यक्रम आयोजित हुआ। भरत सिंह सेरूणा और कल्याण सिंह जंझेऊ ने संघ और हीरक जयन्ती के संबंध में जानकारी प्रदान की। 07 मार्च को ही नागौर संभाग में कंवलाद गांव में स्नेहमिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बलजीत सिंह नाथावतपुरा सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। उन्होंने हीरक जयन्ती कार्यक्रम के आयोजन की तैयारियों के संबंध में सभी को अवगत कराया। 07 मार्च को पोकरण संभाग में भी रामदेवरा और फलसुंड में कार्यक्रम आयोजित किए गए। रामदेवरा के रूणिचा कुआं पर 14 मार्च को प्रस्तावित राजपूत जनप्रतिनिधि सम्मान समारोह की तैयारियों को लेकर बैठक आयोजित की गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वरतेज

संपादकीय

क्या सरकारें शोषक नहीं होतीं?

आधुनिक लोकतंत्र शासन की नवीन अवधारणा मानी जाती है और सिद्धान्ततः इसे शासन की सर्वश्रेष्ठ प्रणाली घोषित करते हुए कहा जाता है कि यह सभी प्रकार के शोषण को समाप्त कर देती है। सिद्धान्ततः यह बात सही भी लगती है कि जब जनता का, जनता द्वारा और जनता के ही लिए शासन होगा तो शोषण कौन करेगा और ऐसे में सभी प्रकार के शोषण मुक्त समाज की स्थापना हो जाएगी। इसी सिद्धान्त से प्रेरित होकर आधुनिक लोकतंत्र को सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली का प्रमाण-पत्र दिया जाता है कि सरकार का निर्माण जनता करती है और सरकार को कायम रहने के लिए जनता के बीच जाना पड़ता है इसीलिए जनता को खुश रखने के लिए ऐसी सरकार शोषण नहीं कर सकती। इसी आधार पर यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया जाता है कि लोकतांत्रिक प्रणाली शोषण मुक्त शासन प्रणाली है। इसी प्रकार यह मान लिया जाता है कि लोकतांत्रिक सरकार शोषण नहीं कर सकती बल्कि वह तो जनकल्याणकारी होती है। इसी कारण लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में सरकार को अतिशय शक्तियां प्रदान की जाती है। यह बात अटपटी सी लगती है कि लोकतांत्रिक सरकार के पास अतिशय शक्तियां होती हैं लेकिन वास्तविकता यही होती है कि इस व्यवस्था में सरकार को स्वयं सिद्ध ईमानदार मान लिया जाता है इसीलिए उसे शक्तिशाली बनाने के लिए समाज के शक्ति को क्षीण किया जाता है। समाज की विभिन्न संस्थाओं को सरकार के अधीन किया जाता है। समाज में हर कार्य को वाया सरकार किया जाता है और इस प्रकार सरकार को सर्वशक्तिमान बनाया जाता है क्यों कि यह स्वयं सिद्ध मान लिया जाता है कि लोकतांत्रिक सरकार कभी शोषण नहीं कर सकती। इसके लिए तर्क यह दिया जाता है कि सरकार जनता द्वारा चुनी जाती है, जनता के प्रति जवाबदेह होती है इसीलिए वह ऐसा नहीं करती। लेकिन विधान मंडलों में बहुमत का मालिक कितना जवाबदेह होता है यह हम सब व्यवहारिक जीवन में महसूस करते हैं। पेट्रोल की मूल कीमत से दुगने तक कर लागू कर मुनाफा कमाने वाली सरकारें शोषक नहीं हैं तो क्या हैं? यह तर्क दिया जा सकता है कि यदि कर नहीं लगाएंगे तो सरकार जनकल्याणकारी योजनाएं कैसे बना पाएगी? जनता की सेवा कैसे कर पाएगी? तो इसमें पहला प्रश्न तो यही उठता है कि क्या सरकारों का रवैया सेवक जैसा होता है? वर्तमान सरकारें तो राजतंत्र से भी अधिक अपने आपको मालिक समझती हैं और इसीलिए किसी भी जनकल्याणकारी कार्य में खर्च कर सरकार में बैठे राजनेता ऐसा प्रदर्शन करते हैं जैसे अपनी जेब से खर्च कर रहे हों? और फिर विधायकों को केवल बजट पढ़ने के लिए टेबलेट उपलब्ध करवाना सेवक जैसा व्यवहार है? अपने वेतन भत्ते बिना बहस के पास कर लेना सेवक जैसा व्यवहार है, अपने बंगलों और गाड़ियों पर हर वर्ष करोड़ों रुपए खर्च करना क्या सेवक जैसा व्यवहार है? जिस जनकल्याण की बात की जाती हैं तो क्या ईंधन पर बेतहाशा टैक्स लगाकर अप्रत्यक्ष रूप से हर गरीब और अमीर की जेब से बेतहाशा पैसा खींचकर उसे ही दान की तरह बांट देना ही जनकल्याण है? यह जनकल्याण नहीं बल्कि केवल और केवल हर काम को वाया सरकार कर श्रेय लेने का नाटक मात्र है और इसी नाटक की आड़ में सरकारें सेवक से शोषक हो जाती हैं।

श्रेष्ठ शासन वह होता है जो न्यूनतम होता है। शासक व्यापारी नहीं होता, शासक उत्पादक भी नहीं होता, शासक तो केवल व्यवस्था का नियामक होता है। व्यापारी एवं उत्पादक के साथ-साथ उपभोक्ता के बीच संतुलन पैदा करने वाली व्यवस्था का नियामक होता है और यदि वह इस नियमन की भूमिका को भली प्रकार निर्वाह कर दे तो शेष सभी व्यवस्थाएं स्वतः ही शोषण मुक्त होकर स्वस्थ हो जाती हैं। हमारे यहां शासन की यही भूमिका आदर्श मानी जाती थी और यह आदर्श भूमिका सदियों के विकास प्रक्रिया का परिणाम थी। लेकिन स्वयं को समझदार समझने वाले लोगों ने इसकी अपेक्षा नई व्यवस्था को आदर्श माना जो येनकेन प्रकारेण शक्तिशाली बनने की चाह तो रखती थी लेकिन सिद्धान्त रूप से स्वयं को लोकतांत्रिक रखना चाहती थी। इसीलिए सिद्धान्त रूप में स्वयं को सेवक कहने वाले लोग व्यवहार में मालिक बनने से तनिक भी गुरेज नहीं करते क्योंकि वास्तविक उद्देश्य तो मालिक बनना ही होता है। मालिक बनने की चाह को मिटाए बिना कोई सेवक नहीं बन सकता और मालिक बनने की चाह को मिटाने के लिए तपस्या करनी पड़ती है, साधना करनी पड़ती है। अधिकार भाव को छोड़कर कर्तव्य भाव को अंगीकार करना पड़ता है लेकिन जिन लोगों के अस्तित्व की शुरुआत ही अधिकार भाव से होती है वे कर्तव्य भाव अपना लेंगे यह आकाश कुसुम की भांति अव्यवहारकि ही लगता है। अधिकारों के पीछे पागल हुए ऐसे लोग जनता को भी ऐसे ही अधिकारों का लालच देते हैं इसीलिए वे सदैव जनता के अधिकारों की ही बात करते हैं, मजदूरों के अधिकारों की बात करते हैं, माहिलाओं के अधिकारों की बात करते हैं, बच्चों के अधिकारों की बात करते हैं। वे हर तरफ अधिकारों की बात का इतना प्रभावी वातावरण बनाते हैं कि इन सबके बीच अपने अधिकारों की निर्बाध पूर्ति का मार्ग बना लेते हैं और इसके लिए उसी जनता का शोषण करने से नहीं चूकते जिनके अधिकारों की वे बातें कर रहे थे। जनता के जेहन से कर्तव्य भाव को तिरोहित कर अधिकारों की चाह को स्थायित्व प्रदान कर ये लोग जनकल्याण के नाम पर सम्पूर्ण व्यवस्था पर एकाधिकार स्थापित कर शोषण का कुचक्र चलाते हैं और शोषण को रोकने के लिए स्थापित होने वाली सरकार ही इनके लिए शोषण का साधन बन जाती है क्यों कि सत्ता बदली है, जीवन थोड़े ही बदला हैं। और जीवन को बदले बिना होने वाली क्रांतियां सदैव ऊपरी ही हुआ करती हैं।

खरी-खरी

'आदर्श प्रेरक है बाधक नहीं'

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को उसके श्रेष्ठतम स्वरूप के दर्शन उन आदर्शों में होते हैं जिनके लिए अतीत में वह व्यक्ति, समाज या राष्ट्र जीया है अथवा मरा है। हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए वे सभी आदर्श ऐसी मंजिल होते हैं जो उन्हें श्रेष्ठतम करने को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार वे सभी आदर्श कुछ कर गुजरने की प्रेरणा होते हैं। ये आदर्श ही व्यक्ति की क्रियाशीलता को दिशा देते हैं और फिर वह क्रियाशीलता अन्यों के लिए प्रेरक बनती है। लेकिन इन आदर्शों की भी कुछ मांग होती है और वह मांग है इन आदर्शों के अनुरूप स्वयं को ढालने के लिए तपस्या के मार्ग को अंगीकार करना। इस मांग को पूरा करने में प्रवृत होने वाले सभी लोगों के लिए ये आदर्श प्रेरक होते हैं, उस प्रेरणा के बल पर ही वे तपस्या के मार्ग को अंगीकार करते हैं और क्रियाशील हो उधर की यात्रा प्रारम्भ करते हैं। लेकिन जिन लोगों को तपस्या से परहेज होता है, जो लोग अपने आपको तनिक भी बदले बिना सब हासिल करना चाहते हैं या स्वयं कुछ किए बिना होता हुआ देखना चाहते हैं, ऐसे लोग प्रायः आदर्शों को लेकर टिप्पणियां करते रहते हैं और जमाने की चाल की दुहाई देकर आदर्शों को छोड़ने की बात किया करते हैं। जो व्यक्ति सुबह जल्दी उठने के लिए नींद से संघर्ष करना नहीं चाहता या उस संघर्ष के कारण आराम में पड़ने वाले खलल को स्वीकार नहीं करना चाहता वह प्रायः कहता रहता है कि जल्दी उठने से क्या होता है? काम करना है मैं रात को देर तक जागकर कर लूंगा, सुबह जल्दी उठना आवश्यक थोड़े ही है? ऐसा व्यक्ति ही सुबह जल्दी उठने की बात को दकियानुसी कहकर स्वयं ही स्वयं को प्रगतिवादी होने का प्रमाण-पत्र देने को तत्पर रहता है। ऐसे ही स्वयं को प्रगतिवादी कहने का प्रमाण-पत्र देने वाले लोग समाज में काम करने वाले उन लोगों पर प्रश्न उठाते हैं जो उन आदर्शों को धरातल पर उतारने को प्रयासरत हैं जिनके कारण हमारी इस कौम ने अलंघ्य ऊंचाईयां स्थापित की है। आश्चर्य होता है जब स्वयं कुछ न करने वाले लोग यह उलाहना देते हैं कि आदर्शों के कारण निष्क्रियता आती है। इससे भी अधिक आश्चर्य तब होता है जब यह कहने वाले लोग स्वयं को बौद्धिक रूप से समृद्ध मानते हैं। खैर उनकी वे जाने लेकिन हमारे सामने प्रश्न खड़ा होता है कि क्या आदर्श भी कभी अवरोधक हो सकते हैं, क्या आदर्श भी कभी अवधिपार हो सकते हैं? क्या माता-पिता की सेवा करना त्रेता का ही आदर्श है, कलियुग का नहीं? क्या दैवीय गुणों का सिंचन करना किसी युग विशेष का आदर्श है? क्या अनुशासन ईमानदारी, कर्तव्य पालन, सत्य बोलना आदि किसी युग विशेष में बेमानी हो जाते हैं? क्या धर्म की स्थापना किसी युग विशेष का आदर्श है जिसके लिए भगवान राम ने समस्त मर्यादाओं का पालन किया वहीं भगवान कृष्ण ने प्रचलित मर्यादाओं की अवहेलना भी की?

क्या महाराणा प्रताप द्वारा रहीम के परिवार को अभयदान या दुर्गादास जी द्वारा दुश्मन की संतान का संरक्षण करने का सुकृत्य किसी युग विशेष का आदर्श है? वास्तविकता तो यह है कि जो आदर्श होता है वह कभी युग सापेक्ष नहीं होता, काल सापेक्ष नहीं होता। आदर्श तो आदर्श होता है और वह हर देश, काल और परिस्थिति में आदर्श ही होता है। हां उन आदर्श की ओर बढ़ने की प्रक्रिया देश, काल और परिस्थिति सापेक्ष होती है। भगवान ने स्वयं ने कभी राम के रूप में तो कभी कृष्ण के रूप में, कभी वामन के रूप में तो कभी अन्य अनेकों रुपों में स्वयं अपना उदाहरण प्रस्तुत किया है कि धर्म, न्याय, प्रकाश, सत्य, अमृत, दैवत्व आदि की स्थापना का आदर्श कोई युग सापेक्ष आदर्श नहीं होता बल्कि ये सर्वयुगीन उपास्य आदर्श है जिनकी ओर बढ़ने की प्रक्रिया युग के अनुसार परिवर्तनशील है। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'समाज चरित्र' में लिखा है कि 'स्वाभाविक कर्म इतिवृत्तात्मक होते हुए भी कर्तव्य कर्म होने के कारण उसमें संसार के समस्त विस्तार समाये हुए हैं।' स्वाभाविक कर्म या कर्तव्य कर्म सभी युगों में प्रासंगिक रहते हैं। केवल इसीलिए उनमें विरत नहीं हुआ जा सकता कि ये पुरानी बात है या इतिहास की बात है। इसीलिए जब तथाकथित समझदार लोग आदर्शों पर प्रश्न उठाकर अपनी निष्क्रियता छिपाते हैं और आदर्शों की उपासना करने वाले लोगों के प्रति शिकायत दर्ज कराते हैं तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। वे कहते है कि अमुक संगठन आदर्शवादी है, अमुक लोग आदर्शवादी है इसीलिए वे समाज की किसी आवश्यकता को पूरा नहीं कर पा रहे हैं तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि उनको स्वयं को किसने रोका है? लेकिन वास्तविकता तो यह है उनको कुछ करना नहीं है बल्कि करने वालों की नुक्ताचीनी करनी है। जिन पर वे निष्क्रियता का आरोप लगाते हैं उनके आदर्श ही उन्हें वह सब करने को प्रेरित करते हैं जो समाज के किसी अभाव की पूर्ति कर सके। इसीलिए वे इस प्रकार की सभी नुक्ताचीनी करने वालों की बुद्धि पर तरस खाकर, उनकी तथाकथित समझदारी को उपेक्षित कर बस केवल करने योग्य कार्य करते रहते हैं और ऐसे ही कर्मशील लोगों के लिए वे सभी आदर्श उनकी पहुंच की सीमा में लगते हैं, वे आदर्श उन्हें निरुत्साहित नहीं करते बल्कि अपने जीवन में तपस्या को अवतरित कर स्वयं की ओर बढ़ने को प्रेरित करते हैं, शेष सभी तो अपनी अकर्मण्यता के कारण तपस्या के मार्ग से बचने के लिए तर्क ढूंढने में अपनी अल्प बुद्धि का तेल निकाला करते हैं और सदैव इस मुगालते में भी जीते रहते है कि उनसे समझदार कोई है ही नहीं।

सिरोही में बैठक संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की सिरोही जिले के सहयोगियों की एक बैठक 7 मार्च 2021 को सिरोही स्थित अतिथि होटल में सम्पन्न हुई जिसमें फाउंडेशन के केंद्रीय कार्यसमिति के सदस्य दिग्विजयसिंह कोलीवाड़ा ने फाउंडेशन के उद्देश्यों एवं 2 वर्ष के कामकाज पर विस्तृत चर्चा की। बैठक में फाउंडेशन की कार्ययोजना के चौथे बिंदु के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों जैसे राजनीतिक, व्यापारिक एवं सरकारी नौकरियो में कार्यरत लोगों के बीच आपसी सामंजस्य एवं सहयोग बिठाकर उन्हें समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई और इस बाबत सिरोही में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई गई।

बलिदान दिवस के लिए सम्पर्क

हीरक जयंती वर्ष के तहत जैसलमेर संभाग में आगामी 23 अप्रैल को देगराय मंदिर में आयोज्य महारावल दूदा तिलोकसी के बलिदान दिवस की तैयारी बाबत 28 फरवरी को भैंसड़ा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर बैठक रखी गई जिसमें आसपास के समाज बंधु उपस्थित हुए। बैठक में ग्रामवार समिति बनाकर प्रचार प्रसार करने का निर्णय लिया गया। साथ ही देगराय ओरण में सांवता गांव के पास मिली दूदाजी की अश्वारूढ़ प्रतिमा को स्थापित कर स्मारक के रूप में विकसित करने की भी चर्चा की गई।

शाखा प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

शेरगढ़ प्रांत के बेलवा गांव स्थित गाजणा माता मंदिर परिसर में जोधपुर संभाग के शाखा शिक्षकों तथा उनके सहयोगियों की दो दिवसीय कार्यशाला 27-28 फरवरी को आयोजित हुई। इस कार्यशाला में संभाग की विभिन्न शाखाओं के शिक्षण प्रमुख एवं सहयोगी शामिल हुए। कार्यशाला का संचालन करते हुए भोपालगढ़ बिलाड़ा प्रांत प्रमुख भरतपाल सिंह दासपां ने शाखा शिक्षण से सम्बंधित सभी पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। शाखा के विभिन्न दायित्वों को बताया एवं उन दायित्वों के निर्वहन में होने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों और उनके समाधान पर चर्चा की गई। शाखा की प्रक्रिया का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में नई और पुरानी शाखाओं के विभिन्न दायित्व दिए गए। सभी शिक्षण प्रमुखों को निर्देशिका एवं व्हीशल भेंट की गई।

सोनू में सामूहिक शाखा

जैसलमेर संभाग के रामगढ़ प्रांत के सोनू गांव में सामूहिक शाखा का आयोजन किया गया। इसमें पारेवर, सोनू, भोजराज की ढाणी, जोगा व पूनमनगर शाखाओं के स्वयंसेवक शामिल हुए। संभाग प्रमुख गोपाल सिंह रणधा के सानिध्य में आयोजित इस शाखाओं में शाखा के सभी कार्यक्रम संपन्न हुए। संभाग प्रमुख ने कहा कि शाखा का नियमित अभ्यास हमारे जीवन में आवश्यक परिवर्तन लाता है। उन्होंने हीरक जयंती बाबत भी सभी को बताया। शाखा का संचालन प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ ने किया।

सिद्धराव मायथी जी सोलंकी की जयंती मनाई

गौरक्षा हेतु आततायियों से संघर्ष कर अपना जीवन बलिदान करने वाले सिद्धराव मायथी जी की जयंती 7 मार्च को रामगढ़ में समारोहपूर्वक मनाई गई। फगनपुरी जी महाराज के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में नवनिर्वाचित जिला प्रमुख प्रताप सिंह सोलंकी का भी सम्मान किया गया। समारोह में मायथी जी शोध संस्थान हेतु सहयोग राशि की घोषणा की गई एवं रामगढ़ के आसुतार चौहारे का नामकरण मायथी जी के नाम से करने की मांग की गई। वक्ताओं ने इतिहास को अमूल्य धरोहर बताया एवं उससे प्रेरणा लेने की आवश्यकता जताई।

पायल कंवर

पायल कंवर भाटी पुत्री विजय सिंह भाटी ने 10वीं व12वीं दोनों बोर्ड परीक्षाओं में गार्गी पुरस्कार प्राप्त किए हैं। छात्रा अपने परिवार सहित जयपुर में निवासरत है एवं भवानी निकेतन महिला पी.जी. महाविद्यालय जयपुर में वाणिज्य संकाय प्रथम वर्ष में अध्ययनरत है।

असिमा राठौड़ की 13 वीं रैंक-

हाल में जारी चार्टेड अकांटटेंट परीक्षा परिणाम में लूणासरा नागौर निवासी सुरेंद्र प्रताप सिंह की पुत्री असिमा राठौड़ ने अखिल भारतीय स्तर पर 13वीं रैंक हासिल की है। असिमा की राजस्थान में तीसरी रैंक है। इनका परिवार जयपुर में रहता है और इन्होंने भवानी निकेतन महिला महाविद्यालय से स्नातक किया है।

क्षत्रिय विद्यार्थी प्रतिभा खोज परीक्षा का प्रथम चरण संपन्न

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा विनकंपेट एप एवं वेबसाइट के सहयोग से आयोजित की गई क्षत्रिय विद्यार्थी प्रतिभा खोज (ऑनलाईन) का प्रथम चरण संपन्न हुआ। 5 फरवरी से 20 फरवरी तक चली इस परीक्षा में लगभग 3000 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से मैरिट में आने वाले 111 विद्यार्थियों का द्वितीय चरण के लिए चयन किया गया। विनकंपेट के संचालक प्रकाशसिंह भदरू ने बताया कि द्वितीय चरण की परीक्षा अप्रेल में आयोजित की जाएगी। यह भी ऑनलाईन ही होगी। इनमें से 33 विद्यार्थियों का चयन का उनका अग्रेतर मार्गदर्शन किया जाएगा।

(पृष्ठ एक का शेष)

तीरथसिंह...

ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ते समय वे राष्ट्रीय स्वयंसेवघ के सक्रिय स्वयंसेवक बन गए। अनुशासन, कर्त्तव्यनिष्ठा, व्यवहार कुशलता और मिलनसार प्रवृत्ति से उन्होंने संगठन में शीघ्र ही अपनी पहचान कायम कर ली। रावत 1983-88 तक भाजपा के प्रचारक, 2000 में नवगठित उत्तराखण्ड राज्य के प्रथम शिक्षा मंत्री, 2012-17 तक विधायक, 2013-15 तक भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष और हिमाचल प्रदेश के चुनाव प्रभारी रह चुके हैं। 2019 में 17वीं लोकसभा के लिए पौडी से चुनाव लड़ा और कांग्रेस के मनीष खंडूरी को 285003 मतों से हराया। तीरथसिंह राव की धर्मपत्नी डॉ. रश्मी रावत डीएवी कॉलेज देहरादून में मनोविज्ञान विषय की प्रोफेसर हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखामृत

वर्चुअल शाखा की अगली कड़ी में 15 फरवरी को 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और व्यक्तिवाद' विषय पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि समाज बहुत से व्यक्तियों का ऐसा समूह है जिसमें मान्यताओं की समानता, अनुशासन और पारिवारिक भाव हो। समाज एक शरीर की भांति है जिसमें एक भी अंग की विकृति पूरे समाज-शरीर को पीड़ित करती है। व्यक्तिवाद ऐसा ही एक भयंकर विकार है जो सम्पूर्ण समाज में विघटन पैदा करता है। व्यक्तिवाद का मूल कारण अहंकार है। अहंकार व्यक्ति में महत्त्व पाने की इच्छा का प्रेरक है। महत्व न मिलने पर यह अहंकार आहत होता है और व्यक्ति को निष्क्रिय ही नहीं विरोधी भी बना देता है। कार्य करने में सफलता मिलने पर भी अहंकार पैदा हो सकता है। अहंकार की यह समस्या संघ मार्ग पर चलने में भी मुख्य बाधा बनकर आती है। जिस व्यक्ति में व्यक्तिवाद पनप जाता है, उसमें संघ जीवित नहीं रह सकता। इसीलिए संघ में व्यक्ति के अहंकार को सामाजिक स्वाभिमान में निमज्जित करने की व्यावहारिक साधना की जाती है। व्यक्तिवाद से स्वयं व्यक्ति की भी हानि होती है और संघ की भी हानि होती है। इससे बचने का उपाय निरन्तर आत्मचिन्तन ही है। संघ का शिक्षण स्वयंसेवक में आत्मचिन्तन की इस प्रक्रिया का सूत्रपात करता है।

22 फरवरी को शाखा की अगली कड़ी में 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और जातीय भाव' विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि आज हमारे आचार-विचार में अनेक भिन्नताएं आ गई हैं जिनके कारण समाज में बिखराव बढ़ गया है। इससे सामाजिक और जातीय भाव का भी ह्रास हो रहा है। जातीय भाव के बिना किसी भी संगठन का निर्माण नहीं हो सकता। जातीय भाव ही व्यक्ति में समाज के प्रति पीड़ा उत्पन्न करता है और इस पीड़ा के आधार पर ही कोई भी सामाजिक संगठन निर्मित हो सकता है। संघ में जो लोग आते हैं उनके आने का कारण भी सामाजिक भाव ही है। इस सामाजिक भाव को सही शिक्षण द्वारा सही दिशा प्रदान करने का कार्य संघ करता है। इस प्रकार के सदशिक्षण के बिना जातीय भाव तामसिक बन कर समाज के लिए घातक भी हो सकता है। क्षत्रिय का अर्थ है जो अमृत की रक्षा करे और विष का विनाश करे। अन्यों के हित के लिए स्वयं के हित को छोड़ने के लिए प्रस्तुत होना ही क्षत्रियत्व है। इस भाव के निर्माण के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। यह कार्य अत्यन्त सावधानी, सजगता और लगातार अभ्यास की मांग करता है।

इसी प्रकार 01 मार्च की शाखा में 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और संस्कार' विषय पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि संस्कार का सहज अर्थ आदत और स्वभाव है। व्यक्ति के स्वभाव के निर्धारक तत्व मूलतः दो प्रकार के हैं - वंशानुगत विशेषताएं और बाह्य शिक्षण। वंशानुगत विशेषताएं एक प्रकार के समाज अथवा जाति में लगभग एक समान होती है। हमारी जातीय परम्परा के सातत्य को पीढ़ियों तक बनाए रखने के कारण हमारी वंशानुगत विशेषताएं भी लगभग एक समान है। किन्तु बाह्य शिक्षण द्वारा उन वंशानुगत संस्कारों का रक्षण, पोषण और संवर्द्धन आज नहीं हो पा रहा है। इस कमी को पूरा करने का कार्य संघ अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा कर रहा है। बाहर के विषैले वातावरण की प्रतिकूलताओं के कारण यह कार्य अत्यंत कठिन है। संस्कार निर्माण एक दीर्घकालिक और सतत प्रक्रिया है। जिस प्रकार बार-बार आने जाने से रस्सी भी पत्थर पर निशान डाल देती है उसी प्रकार बार बार अभ्यास द्वारा संस्कारों को सुदृढ किया जा सकता है। संघ शिक्षण द्वारा व्यक्ति में गीता में वर्णित क्षत्रियोचित सातों गुणों - शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, संघर्षशीलता, दान और ईश्वरी भाव का सिंचन सामूहिक साधना द्वारा किया जाता है।

08 मार्च को 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और राजनीति' विषय पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि राजनीति का अर्थ है राज्य को चलाने की नीति अर्थात ऐसी नीति जिससे उस देश/राज्य का विकास हो, उस राज्य के प्रत्येक नागरिक को उन्नति करने का पूरा अवसर मिले। जो पूरे देश के हित की बात करे, वही राजनीति है। लेकिन आज के समय में येन-केन-प्रकरण सत्ता प्राप्त करना ही राजनीति का रूप रह गया है। नैतिक मूल्यों का पुर्णतः अवमूल्यन हो गया है। राजनैतिक दलों का एकमात्र कार्य अपनी स्वार्थपूर्ति का ही रह गया है। ऐसी परिस्थिति में प्रश्न उठता है कि इस प्रकार की राजनीति को लेकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की क्या नीति है? संघ में हम क्षात्र धर्म के पालन की बात करते हैं। क्या बिना सत्ता के क्षात्रधर्म का पालन हो सकता है? इसका उत्तर है कि - हाँ! क्षात्रधर्म का पालन बिना सत्ता प्राप्त किए भी हो सकता है। लेकिन यदि सत्ता सच्चे क्षत्रिय के हाथ में हो तो क्षात्रधर्म पालन का फल सम्पूर्ण समाज के लिए अधिक हितकारी होता है। लेकिन यदि हम सत्ता में आ गए परंतु क्षात्रधर्म का पालन नहीं करते तो वह सत्ता उसी तरह निरर्थक होगी जिस प्रकार आज अन्य लोगों के हाथ में होने पर है। सत्ता प्राप्ति के लिए आवश्यक क्षमता जुटाने में भी समय लगता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रारम्भ से ही एक सामाजिक और शैक्षणिक संस्था के रूप में कार्य कर रहा है। राजनीति से संघ का कभी कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रहा। यद्यपि व्यक्तिगत रूप से संघ के अनेक स्वयंसेवक राजनीति में गए हैं और सफल भी हुए हैं। स्वयं पूज्य तनसिंह जी भी दो बार सांसद रहे, दो बार विधायक रहे, विधानसभा में विरोधी दल के नेता भी रहे लेकिन राजनीति से वे बिल्कुल निर्लिप्त रहे। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में कभी किसी की अनुचित सिफारिश नहीं की, ना ही किसी अनुचित कार्य को स्वीकार किया। यद्यपि नीतिगत मामलों में वे स्पष्टतया अपनी बात सामने रखा करते थे। तनसिंह जी के अतिरिक्त भी अनेकों स्वयंसेवक राजनीति में जाकर विधानसभा तथा संसद में पहुँचे, राज्य व केंद्र सरकारों में मंत्री भी बने, किन्तु संघ सदैव राजनीति से दूर ही रहा। संघ ने कभी किसी राजनीतिक दल विशेष अथवा व्यक्ति विशेष का समर्थन नहीं किया। संघ की यही नीति रही कि हमारे समाज के जो भी व्यक्ति राजनीति में हैं, उनको आगे बढ़ाने में हम यथाशक्ति सहयोग करें। संघ के बढ़ते प्रसार के साथ समाज के राजनीतिक वर्ग द्वारा यह मांग की गई कि संघ की शक्ति का प्रयोग समाज में राजनीतिक चेतना बढ़ाने के लिए भी किया जाना चाहिए जिससे समाज के राजनीतिज्ञों को लाभ हो सके। इस मांग के अनुरूप ही श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना की गई। प्रताप फाउंडेशन ने गांव-गांव, नगर-नगर जाकर चिंतन बैठकों का आयोजन किया और समाज में राजनैतिक जागृति लाने के लिए प्रयास किए। विभिन्न राजनीतिक दलों में हमारे समाज के व्यक्तियों से भी संपर्क किया गया। इसके सुपरिणाम भी आए। इस प्रक्रिया के प्रारम्भ से पूर्व राजस्थान में जो विधानसभा चुनाव हुए थे उनमें हमारे समाज से केवल 17 विधायक जीत कर आए थे, जबकि अगले चुनावों में 27 विधायक जीत कर आए। किन्तु राजनीतिज्ञों की स्वार्थ वृत्ति के कारण उन्होंने इस सामाजिक जागृति का केवल अपने लिए और अपने दल के लिए प्रयोग करने का प्रयास भी किया। इस प्रयत्न का विरोध करने के कारण प्रताप फाउंडेशन को भी ऐसे राजनीतिज्ञों के विरोध का सामना करना पड़ा। वर्तमान राजनीति के इस प्रकार के नकारात्मक चरित्र के कारण ही संघ राजनीति से दूरी बनाकर रखता है। संघ तो समाज में संस्कार निर्माण और चरित्र निर्माण द्वारा समाज को मजबूत बनाने के अपने मुख्य कार्य में ही संलग्न है। आज के विपरीत वातावरण में यह कार्य अत्यंत कठिन है और अत्यधिक ऊर्जा और समय की मांग करता है। वर्तमान राजनीति के संबंध में संघ का यही प्रयास है कि हमारे समाज की राजनीतिक सहभागिता बढ़ें और साथ ही राजनीति में नैतिक मूल्यों का महत्त्व भी बढ़ें।

11 मार्च को 'गीत तुम्हारे कण्ठ के बगीचे' सहगायन पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के साधकों के लिए पूज्य तनसिंह जी ने अनेकों सहगीत लिखें हैं जो 'झनकार' पुस्तक में संग्रहित है। ये गीत साधकों को प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। संघ के मार्ग पर बढ़ते हुए साधक को यह अनुभव होता है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य तनसिंह जी का लगाया हुआ बगीचा है और उसमें उनके श्रम, त्याग और तपस्या के अनगिनत फूल खिले हैं। तनसिंह जी का जीवन ऐसा था कि उनका प्रत्येक शब्द, प्रत्येक भाव, प्रत्येक कृत्य अपने आप में एक गीत ही है। उन सबको समझने में, ग्रहण करने में साधक स्वयं को अक्षम पाता है और पूज्य तनसिंह जी की महानता को अनुभव करके साधक के व्यथित हृदय में यह भाव उठते हैं कि 'गीत तुम्हारे कण्ठ के बगीचे खिलते रहे, मैं चुन न सका यह बात बड़ी अकुलाती।' पूज्य तनसिंह जी का समाज के प्रति जो प्रेम था वही उनकी व्यथा का उद्गम था। उनकी यह व्यथा उनके संपर्क में आने वाले प्रत्येक साधक को व्यथित कर डालती है और साधक विवशता पूर्वक कह उठता है कि 'दर्द भरी तेरी प्रीत की प्याली छलक चली तब, पी जाने की मुझे रह-रह कसम दिलाती।' महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए घोर श्रम करना पड़ता है, पसीना बहाना पड़ता है। पूज्य तनसिंह जी को भी समाज के प्रति उनके प्रेम ने कभी चैन से नहीं बैठने दिया, उनका जीवन कर्मठता की अथक कहानी है। उनके आंसुओं में समाज की व्यथा बहती है और साधक इन आंसुओं की धार में स्वयं को एक तिनके की भांति अनुभव करता है। तनसिंह जी ने ऐसी तपस्या की है कि साधक जिस भी दिशा में बढ़ता है उसी तरफ उसे पूज्य श्री के पदचिह्न दिखाई पड़ते हैं। पूज्य श्री के द्वारा बताए मार्ग के अलावा अन्य सभी मार्गों की निरर्थकता भी साधक को स्पष्ट हो जाती है। साधक अनुभव करता है कि इस मार्ग पर बढ़ते हुए उसका जीवन भी दीपक की भांति प्रकाशमान हो उठेगा। जिस प्रकार तनसिंह जी ने समाज के आंगन में नये रंग भरे हैं उसी प्रकार साधक में भी अपने जीवन को नया स्वरूप देने का विश्वास जागता है। ऐसी स्थिति में साधक तनसिंह जी से प्रार्थना करता है कि उनकी कृपा से उसके जीवन का अंधकार भी मिट जाये। कृतज्ञ बनकर साधक सामूहिक साधना के वास्तविक अर्थ को भी समझता है, जीवन के सत्य को भी अनुभव करता है। मोतियों की भांति साधकों को एक माला में पिरोने की सांघिक साधना का रहस्य भी उसके सामने स्पष्ट हो उठता है। ऐसे में साधक जब तनसिंह जी के, संघ के चरणों में अर्पण करने के लिए अपने पास जो कुछ है उसे टटोलता है तो वह पाता है कि उसके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। उसके पास न तो सुदामा के तीन मुट्ठी चावल ही है ना ही शबरी की भाँति खट्टे मीठे बेर ही है जिनकी संघ को आवश्यकता हो। संघ के लिए तो वह केवल एक ही प्रकार से अपना प्रेम प्रकट कर सकता है और वह है स्वयं संघ की मंजिल का मुसाफिर बनकर। ऐसा अनुभव होने पर साधक अपने आप को संघ को समर्पित करके संघ से इस प्रेमपूर्ण भेंट को स्वीकार करने की प्रार्थना करता है। साधक के इन्हीं भावों को इस गीत के माध्यम से पूज्य तनसिंह जी ने स्वर दिया है।

(पृष्ठ एक का शेष)

जीते हैं...

उन्होंने हीरक जयंती वर्ष के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर राम सिंह चाडी,कालू सिंह धुंधाड़ा, मोहन सिंह जोधा, विजय सिंह सुथला, राजवीर सिंह बेंगटी, माधु सिंह पालीना, छोटू सिंह देवातू, प्रतापसिंह बेलवा,पप्पू सिंह भांडु, हुकम सिंह देवानिया, नरेंद्र सिंह मतोड़ा, बाबूसिंह बापिणी, प्रताप सिंह भेड़, परबतसिंह सामराऊ, भंवरसिंह नाथड़ाऊ, जयसिंह बोयल, भवानी सिंह देचु आदि जनप्रतिनिधियों ने कार्यशाला में अपने विचार रखे। सभी वक्ताओं ने फाउंडेशन की इस पहल की सराहना की एवं बार बार ऐसे मिलन होते रहें इसकी आवश्यकता बतायी। कार्यशाला के प्रारंभ में बताये गए विषयों पर भी सबने अपने सुझाव रखे एवं अनुभव साझा किए। कार्यशाला में जोधपुर जिले के नवनिर्वाचित सरपंचों, पार्षदों एवं निवर्तमान पंचायत समिति सदस्यों ने भाग लिया। नागौर जिले के जनप्रतिनिधियों की कार्यशाला 7 मार्च को कुचामन में संपन्न हुई। संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा के सानिध्य में आयोजित इस कार्यशाला में पूज्य तनसिंह को नमन के पश्चात् परस्पर परिचय हुआ एवं फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य अरविंद सिंह बालवा ने फाउंडेशन का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यशाला का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताया गया कि फाउंडेशन को संघ द्वारा सौंपे गए कार्यों में से एक हमारे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी लोगों के बीच सहयोग, समन्वय एवं उपयोगिता बढ़ाना है। इसी क्रम में आप सभी जनप्रतिनिधियों की कार्यशाला आयोजित की जा रही है जिसका विषय भी यही है कि आप सब के बीच सहयोग एवं सामंजस्य कैसे अधिकतम बढ़े एवं आप किस प्रकार समाज के लिए अधिकतम उपयोगी हो सकते हैं। उपस्थित जनप्रतिनिधियों में से अंजु शेखावत, दशरतसिंह बेगसर, राजेन्द्रसिंह धोलिया, जेठुसिंह खारड़िया, जितेन्द्रसिंह बरुण, अजीतसिंह नैणिया, दिलीपसिंह गैलासर, शिवप्रतापसिंह ईडवा, शिवरामसिंह नोखा चांदावता आदि ने अपने विचार रखे। सभी ने इस बात पर सहमति जताई कि ऐसी जिला स्तरीय कार्यशालाएं वर्ष में कम से कम दो बार आयोजित की जानी चाहिए। आगामी सितम्बर माह में पुनः ऐसी कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय हुआ। जिले की राजनीति में राजपूत नेतृत्व को संयोजित करने के लिए इनमें वर्तमान जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ पूर्व में रह चुके जनप्रतिनिधियों को भी बुलाना प्रारम्भ करें। बार-बार हम किसी न किसी सामाजिक बहाने से मिलते रहें ताकि हमारी निकटता बढ़े और हम एक-दूसरे के सहयोगी बन सकें। हमें जिला स्तर पर राजपूत प्रतिनिधियों का संगठन बनाना चाहिए ताकि हम सामाजिक विषयों को प्रशासन के सामने एकीकृत रूप से उठा सकें एवं एक-दूसरे के काम आ सकें। नागौर जिले की राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए जो समाज हमारे साथ आ सकते हैं उनके लिए सदैव प्रयास जारी रहना चाहिए एवं साथ ही हमारा कार्यकाल ऐसा होना चाहिए कि लोग पुनः किसी राजपूत को ही चुनें। कार्यशाला में संघ के नागौर संभाग के संभाग प्रमुख शिंभुसिंह आसरवा ने संघ की हीरक जयंती वर्ष के दौरान हो रहे कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी एवं जनप्रतिनिधि इसमें किस प्रकार सहयोगी बन सकते हैं यह बताया। कार्यशाला का संचालन जयसिंह सागुबड़ी ने किया।

भूंगरा में...

जिस प्रकार से सैनिक सीमा पर चौकस रहकर बाहरी शत्रुओं से हमारी रक्षा करता है उसी प्रकार हमें भी हर समय जागरुक रहकर हमारे भीतर के शत्रुओं की पहचान कर अपने आपकी रक्षा करनी है। युद्ध बाहर और भीतर दोनों जगह है। जो भी सैनिक की तरह हर समय जागरुक रहकर भगवान का स्मरण करते हुए संघर्षरत रहता है उसकी विजय निश्चित है। इसलिए आवश्यक है कि यह जागरुकता हमारे में आये ताकि हम बाहर व भीतर के शत्रुओं पर विजयी हो सकें। प्रदेश भर में अपने स्वयं के खर्चे से ऐसी सैकडों प्रतिमाएं लगाने का अभियान चला रहे प्रेम सिंह बाजौर ने कहा कि शहीदों को हमें देवताओं के रूप में पूजना चाहिए क्योंकि इन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण कर हमारी रक्षा की है। समारोह को तारातरा मठ के महंत प्रताप पुरी जी, पूर्व विधायक श्री बाबुसिंह जी नाथडाऊ ने भी संबोधित किया। समारोह में संघ के स्वयंसेवकों सहित क्षेत्र के अनेक समाज बन्धु सम्मिलित हुए।

(पृष्ठ तीन का शेष)

हीरक जयंती...

07 मार्च को ही बालोतरा संभाग के सिवाणा प्रान्त में पादरू गांव स्थित श्री जैतमाल राजपूत छात्रावास में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी ने सभी स्वयंसेवकों से हीरक जयन्ती की तैयारियों पर चर्चा की। संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रमों के आयोजन पर भी चर्चा की गई। बैठक के दौरान काठाड़ी, कुंडल व पादरू मंडल के स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

गुजरात के भावनगर में वरतेज गांव के विराज फार्म पर 07 मार्च को श्री क्षत्रिय युवक संघ, गोहिलवाड़ राजपूत समाज, कच्छ काठियावाड़ गुजरात गरासिया राजपूत एसोसिएशन और हरिसिंह जी गढुला ट्रस्ट, धंधुका के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवंत सिंह पांची ने संघ की कार्यप्रणाली और विचारधारा के बारे में बताया। कच्छ काठियावाड़ गुजरात गरासिया राजपूत एसोसिएशन के नवनियुक्त अध्यक्ष ध्रुवकुमार सिंह ने बताया कि 1924 में इसी स्थान पर मनुभा बापू चेर के नेतृत्व में तीन दिवसीय चिंतन शिविर आयोजित हुआ था जिसमें लगभग 15000 राजपूतों ने भाग लिया था। इसे वरतेज परिषद के नाम से जाना जाता है। संघ के केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची द्वारा हीरक जयन्ती के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। गोहिलवाड़ राजपूत समाज के प्रमुख वासुदेव सिंह वरतेज, दशरथ सिंह वरतेज, अर्जुन सिंह गढुला ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। हरिसिंह जी गढुला ट्रस्ट, धंधुका की ओर से निबंध स्पर्धा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्नेहभोज भी रखा गया। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। 05 मार्च को बनासकांठा प्रान्त के दांतीवाड़ा में भी हीरक जयन्ती वर्ष की तैयारी में बैठक क्लासिकल ऑटो शो रूम में रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख अजीतसिंह कुणघेर, ईश्वरसिंह आरखी, डूंगर सिंह चारड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इस दौरान दांतीवाड़ा तहसील के 13 गांवों में संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रमों के आयोजन की योजना तैयार की गई, साथ ही गोगुदरा में तीन दिवसीय शिविर के प्रस्ताव पर भी चर्चा हुई। बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत ही 07 मार्च को थराद तहसील के शेराउ, ताखुवा, भड़ोदर, भापी गांवों में संपर्क यात्रा आयोजित की गई जिसमें प्रांत प्रमुख अजीतसिंह कुणघेर, थानसिंह लोरवाड़ा, अरविंदसिंह नारोली, डूंगरसिंह चारड़ा, डूंगरसिंह रामसण ने हीरक जयंती बाबत चर्चा की। महेसाणा प्रांत के जास्का, सुंधिया और मछावा गांवों में भी 7 मार्च को ही संपर्क यात्रा आयोजित की गई। इस यात्रा के दौरान भी इन गांवों में स्नेहमिलन रख संघ बाबत चर्चा की गई। यात्रा में रणजीत सिंह नंदाली, महेश सिंह जगन्नाथपुरा, करणसिंह, विरलसिंह, भूपेंद्र सिंह आदि शामिल रहे।

7 मार्च को मध्य गुजरात संभाग के कानेटी गांव में स्थित दरबार वाड़ी में भी तीर्थ दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख दीवान सिंह कानेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कानेटी गांव तथा आस-पास के क्षेत्र में संघ के अनेकों शिविर लग चुके हैं। कानेटी प्राथमिक शाला में लगभग 15 शिविरों का आयोजन हो चुका है। शक्ति माता मंदिर, वाडीनाथ महादेव, लम्बे नारायण आश्रम में भी शिविर लग चुके हैं। सेफायर में 2009 में तथा गरोडिया में 2014 में उच्च प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित हुए थे। इन सभी शिविर स्थलों का यह सामूहिक तीर्थदर्शन कार्यक्रम था। कार्यक्रम को दिग्विजय सिंह पलवाड़ा, अरविंद सिंह कानेटी, मितराज सिंह कानेटी और अनिरुद्ध सिंह कानेटी ने संबोधित किया। गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत के अंतर्गत अवाणियाँ गाँव में 11 मार्च को संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अवाणियाँ शाखा स्थल पर सम्पन्न इस कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगल सिंह धोलेरा तथा संघ के केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ तीर्थ दर्शन और हीरक जयन्ती वर्ष के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की। भागीरथ सिंह साँढखाखरा, प्रवीण सिंह धोलेरा तथा नयनाबा साँढखाखरा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मातृशक्ति सहित लगभग 200 समाजबंधुओं की उपस्थिति रही। मोरचंद प्रान्त में ही मुखड़ो जी गोहिल आश्रम में महिला स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। इस दौरान जयपुर में होने वाले हीरक जयन्ती समारोह में मातृशक्ति की सहभगिता पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का संचालन उर्मिलाबा पच्छेगाम ने किया। स्नेहभोज भी रखा गया। बालोतरा स्थित श्री वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें तिलवाड़ा, टापरा, थोब, बालोतरा, परेऊ, वरिया, मलवा तथा आवासन मण्डल की आठ टीमों ने भाग लिया। 8 मार्च को प्रतियोगिता के निर्णायक मैच में तिलवाड़ा की टीम विजयी रही। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी जैतमाल सिंह राठौड़, चंदन सिंह चांदेसरा तथा स्वरूप सिंह राठौड़ ने प्रतिभागियों तथा उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित किया और हीरक जयन्ती वर्ष के सम्बंध में जानकारी प्रदान की।

प्रेम सिंह बनवासा को मातृशोक

राज कंवर

संघ के स्वयंसेवक प्रेम सिंह बनवासा की माताजी **राज कंवर** जी का 3 फरवरी को देहावसान हो गया । पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है। परमेश्वर उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

श्रम करें, तो पहचान स्वयं बन जाएगी : महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़

उदयपुर। मेवाड़ के पूर्व महाराणा भूपालसिंह मेवाड़ की 137 वीं जयंती के अवसर पर मंगलवार 9 मार्च को भूपाल नोबल्स विद्यालय के प्रताप चौक में स्मरणांजलि समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मातृ संस्था विद्या प्रचारणी सभा का प्रतिवेदन संस्थान के महेन्द्र सिंह आगरिया द्वारा प्रस्तुत किया गया। वहीं महाराणा भूपालसिंह के शासन प्रबंध पर एक पत्र वाचन भी किया गया। इस अवसर पर महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक दिन में 24 घण्टे, हर घण्टे में 60 मिनट और हर मिनट में 60 सेकण्ड होते है। इनका कुल जमा 86400 होता है। इस पूरी संख्या में से एक अंक लें और उस अंक के सम भी क्या हम सकारात्मक हो पाते हैं। शायद कोई हां करने की स्थिति में नहीं होता हैं। इस स्थिति में हमें प्रयास करना चाहिए कि हम सकारात्मक बनें। कोई भी विषय विवाद के लिए नहीं होता है। आगे बढ़ने का मार्ग हल खोजना है, विवाद में पड़ना नहीं। हमको इससे बचना चाहिए। विकास के लिए सही सोच ही इस संस्था की नींव है। मैं अपने पितामह महाराणा भूपालसिंह मेवाड़ से अत्यधिक प्रभावित रहा हूं। उनसे मैंने सकारात्मकता का भाव ग्रहण किया और चाहता हूं कि संस्था में सकारात्मकता का भाव आए और विकास के पथ पर आगे बढ़ें। उन्होंने वर्ष भर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसी को किसी के सामने स्वयं का श्रेष्ठ स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है। श्रेष्ठता स्वयं को स्थापित करती है। सर्वश्रेष्ठ अंक लाने वाले विद्यार्थियों ने शिक्षकों से उन्हें अच्छे अंक देने का अनुरोध नहीं किया था, यह उन्होंने अपने श्रम से पाया है। श्रम करें और सम्मान को प्राप्त करें, यही ध्येय होना चाहिए। इसके लिए किसी के सामने प्रस्तुत होने या अनुरोध की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि जीवन में कठिनाइयां बहुत हैं, लेकिन इससे आहत नहीं हुआ जा सकता। उनका समाना करना और संघर्ष से उन पर विजय पाना ही हमारी थाती है। मेरा नई पीढ़ी को यही संदेश है।

बलिदान दिवस के पेम्पलेट का विमोचन

जैसलमेर, महाशिवरात्रि मेले के शुभ अवसर पर 11 मार्च को श्री शिवसुखनाथ जी मठाधीश द्वारा आसरी मठ में हुए सादे समारोह में वीरवर दूदा- तिलोकसी बलिदान दिवस के पेम्पलेट का विमोचन किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा 23 अप्रैल को श्री देगराय में पहली बार ऐसा भव्य आयोजन किया जा रहा है। जैसलमेर दुर्ग के दूसरे शाके के महानायक दूदा व उनके अनुज तिलोकसी ने अलाउद्दीन खिलजी की सेना से

लोहा लेते हुए वीरगति प्राप्त की थी। जैसलमेर दुर्ग को ढाई शाकों का गौरव प्राप्त है। दिल्ली सल्तनत के दौरान सन 1294 ईस्वी में महारावल मूलराज व उनके अनुज रतनसी द्वारा पहले शाके का नेतृत्व किया गया था। दुर्ग के पतन के साथ मुस्लिम आक्रमणकारियों ने यहाँ कब्जा कर लिया। तत्पश्चात वीर दूदा- तिलोकसी ने मुस्लिम थानों को विवश कर यहाँ से खदेड़ दिया व पुनः राज कायम कर शांति की स्थापना की। सन 1311 ईस्वी में उन्होंने बड़े युद्ध का सामना किया व जौहर शाके की परंपरा का अनुसरण कर आत्मोत्सर्ग किया। चांधन प्रान्त प्रमुख तारेंद्र सिंह ने कहा कि आज इस पेम्पलेट के विमोचन के साथ हम प्रचार - प्रसार की औपचारिक शुरूआत कर रहे हैं। हम गांव - गांव तक पहुंचे एवं इस कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें। इस कार्यक्रम में सभी जाति वर्ग के लोगों को आमंत्रित किया जा रहा है जिससे वे हमारे राष्ट्र नायक व महान योद्धा के जीवन से प्रेरणा ले सके। आगामी समय में बैठकें आयोजित कर प्रचार हेतु जिम्मेदारियां सौंपी जाएगी।

बायतु एवं बालोतरा में शिविर संपन्न

बालोतरा संभाग के बायतु प्रांत के पाटोदी मंडल के भाटियों की ढाणी, केसरपुरा में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 27 फरवरी से 2 मार्च 2021 तक हुआ। शिविर के विदाई कार्यक्रम के अवसर पर संभाग प्रमुख मूलसिह काठाड़ी ने कहा कि इन चार दिनों के दौरान खेलों, चचाओं एवं यज्ञ के माध्यम से क्षत्रिय के धर्म, इतिहास, संस्कृति, मर्यादा, ईमानदारी, अनुशासन, त्याग व क्षत्रिय संस्कारों को जीवन में ढालने का अभ्यास करवाया गया। हम इन संस्कारों को जीवन में ढालकर आदर्श स्थापित करें। महापुरुषों के जीवन चरित्र बताते हुए उन्होंने कहा कि भगवान राम, श्रीकृष्ण, महाराणा प्रताप व दुगार्दास सहित अन्य सभी महापुरुषों के जीवन चरित्र को देखें तो उनके सामने कठिन परिस्थितियां आईं, लेकिन उनको धैर्य व संयम से पार करते हुए जो मर्यादा स्थापित की उन मयार्दाओं को हम अपने परिश्रम व त्याग से जीवित रखने का प्रयास करें तभी हम सच्चे क्षत्रिय हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का 74वां स्थापना दिवस हीरक जयंती वर्ष के रूप में जयपुर में 22 दिसम्बर को मनाया जा रहा है जिसमें लाखों की संख्या में

समाज बंधु केसरिया मेले के रूप जयपुर में एकत्रित होंगे। आप सब भी तन मन धन से इसमें सहयोग करें। शिविर में सहयोगी खुशाल सिंह पुत्र तुलछीसिंह सांगरानाडी द्वारा शिविरार्थियों को पूज्य तनसिंहजी द्वारा रचित साहित्य वितरित किया गया। बालोतरा स्थित दुगार्दास राजपूत छात्रावास में चार दिवसीय बालिका शिविर 27 फरवरी से 1 मार्च तक संपन्न हुआ। रतन कंवर सेतरावा के संचालन में संपन्न इस शिविर में काठाड़ी, धीरा, धारणा, मूठली, कुंडल, सिणेर, लालाणा, देवंदी, जिनपुर, चांदेसरा, नौसर, डंडाली, सोमेसर, वरिया, जागसा, मेवानगर, कोटड़ी, बिसाला, भाऊड़ा, रेवाड़ा जेतमाल, थोब, साथुणी, दहीपड़ा, चिरड़िया, इंद्रोई, आकोड़ा, जानकी, कारटिया, हापों की ढाणी, चारड़ा, सेलावास, खुहड़ी, मिठड़िया, सुरावा, खेड़ा आदि गांवों की बालिकाओं ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली से प्रशिक्षण लिया। शिविरार्थियों को विदा देते हुए शिविर प्रमुख रतन कंवर सेतरावा ने बताया कि यहां चार दिनों में जो संस्कार अर्जित किए हैं, उनकों हमेशा अपने आचरण में बनाए रखें, उन्हें भूलें नहीं, स्वयं याद रखें तथा दूसरों को भी बतायें।

पूर्व राज्यपाल को श्रद्धांजलि

राजस्थान एवं गुजरात के पूर्व राज्यपाल रह चुके न्यायाधिपति अंशुमानसिंह के देहावसान पर राजपूत सभा जयपुर द्वारा 12 मार्च को श्रद्धांजलि सभा रखी गई जिसमें विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा के लिए प्रार्थना की गई एवं पुष्पांजलि अर्पित की गई।

वसुंधरा चौहान सब इंस्पेक्टर नियुक्त

धौलपुर निवासी पोपसिंह की बहादुर पुत्री वसुंधरा चौहान को राजस्थान सरकार ने सब इंस्पेक्टर के पद पर सीधी नियुक्ति प्रदान की है। एनसीसी का सी सर्टिफिकेट धारी एवं क्रिमिनोलोजी विषय की छात्रा वसुंधरा ने 3 मार्च को कुख्यात दस्यु धर्मेन्द्र उर्फ लुक्का को हथियारबंद बदमाशों द्वारा पुलिस अभिरक्षा से छुड़वाने के प्रयास को विफल कर दिया था। बहादुर छात्रा ने अपनी जान की परवाह किए बिना बदमाशों से संघर्ष किया एवं उनके मंसूबों को विफल कर शौर्य की मिसाल कायम की।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org